B.A Part-2 (Subsidiary) Topic-Goals of Psychoanalytic Therapy (Guest Faculty Deptt of Psychology Vaishali Mahila College Hajipur)

मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा के लक्ष्य

(Goals of Psychoanalytic therapy)

मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा का मौलिक लक्ष्य रोगी को अपने आप को उत्तम ढंग से समझने में मदद करने से होता है ताकि वह रोगी पहले से अधिक समायोजी ढंग से सोच सके तथा व्यवहार कर सकें। इस चिकित्सा में पूर्वकल्पना यह होता है कि जब रोगी यह देख पाता है कि कुसमायोजी व्यवहार करने के क्या वास्तविक कारण है (जो प्रायः अचेतन में होते हैं) तथा जब वे यह देखते हैं कि वह कारण

बहुत ठोसएवं वैध नहीं है तो वह अपने आप कुसमायोजित ढंग से व्यवहार करना बंद कर देते हैं। इस तरह से रोगी का लक्षण अपने आप दूर हो जाता है।

फ्रायड ने मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा का लक्ष्य पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि मनोविश्लेषणात्मक परिस्थिति कुछ इस प्रकार की होती है- रोगी का ego उसके आंतरिक मानसिक संघर्षों से कमजोर पड़ जाता है। इन मानसिक संघर्षों में Id का मूलप्रवृतिक मांग तथा superego की नैतिकता पूर्णमांग का महत्वपूर्ण योगदान होता है। विश्लेषक रोगी को इन मानसिक संघर्षों से उत्पन्न समस्याओं से निबटने में उन्हें मदद करता है। इस

उद्देश्य से रोगी तथा विश्लेषक दोनों मिलकर super ego तथा id की उक्त प्रवृत्तियों से निपटने के लिए युद्धस्तर पर कार्य प्रारंभ कर देते हैं। इस कार्य में रोगी तथा विश्लेषक एक दूसरे को मदद करते हैं। रोगी का बीमार ego विश्लेषक के सामने उन सभी सामग्रियों को सामने रखता है जो उनका आत्म प्रत्यक्षण उपलब्ध कराता है। विश्लेषक उन सामग्रियों को जो रोगी के अचेतन द्वारा प्रभावित हो चुका होता है की नयी व्याख्या प्रदान करता है जिससे रोगी को अपनी अज्ञानता तथा भूल का एहसास हो पाता है। इससे ego को अपने खोए मानसिक ऊर्जा पर पर्याप्त नियंत्रण बढ़

जाता है और उसके व्यवहार में सामान्यता आने लगती है।

मनोविश्लेषणात्मक उपचार के निम्नांकित तीन मुख्य उद्देश्य हैं-

- रोगी के समस्यात्मक व्यवहार के कारणों में बौद्धिक एवं सांवेगिक सूझ विकसित करना।
- रोगी में सूझ विकसित होने के बाद उस सूझ का आशय के बारे में पता लगाना होता है।
- धीरे-धीरे रोगी के Id तथा super ego की क्रियाओं पर के नियंत्रण को बढ़ाना होता है।

मनोविश्लेषण चिकित्सा के उपरोक्त महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने की प्रक्रिया में रोगी के व्यक्तित्व का क्रमिक पुनर्संरचना सम्मिलित होता है। यह प्रक्रिया बहुत लंबी चलती है तथा इसमें उच्च स्तरीय चिकित्सीय कौशल की जरूरत पड़ती है।